

स्व-चेतना (Self-Consciousness) का तुलनात्मक विश्लेषण: बौद्ध अनात्मवाद, No-Ownership Theory, Self-Model Theory एवं Default Mode Network (DMN) के विशेष संदर्भ में

रघुनाथ पटेल¹

प्राप्ति: 16 जून 2026 / स्वीकृत: 28 जून 2026 / प्रकाशित: 30 जून 2026

Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).

सारांश (Abstract)

चेतना (Consciousness) तथा "स्व" (Self) की अवधारणा दर्शन एवं आधुनिक विज्ञान दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण विमर्श का विषय रही है। कुछ पारंपरिक दार्शनिक परंपराएँ जहाँ आत्मा को स्थायी एवं स्वतंत्र सत्ता के रूप में स्वीकार करती हैं, वहीं बौद्ध दर्शन का "अनात्मवाद" सिद्धांत इस धारणा का निषेध करता है। बौद्ध दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व पंचस्कंधों— रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार एवं विज्ञान का परिवर्तनशील समुच्चय है, जिसमें कोई नित्य एवं शाश्वत आत्मा विद्यमान नहीं होती। इसी प्रकार David Hume की "No-Ownership" अथवा "Bundle Theory" आत्मा को अनुभवों एवं संवेदनाओं के समूह के रूप में व्याख्यायित करती है। आधुनिक समय में हुए चेतना संबंधी अध्ययनों में प्रमुख रूप से Thomas Metzinger की "Self-Model Theory" यह प्रतिपादित करती है कि 'Self' मस्तिष्क द्वारा निर्मित एक पारदर्शी मानसिक मॉडल है, न कि कोई स्वतंत्र वास्तविक सत्ता। दूसरी ओर आधुनिक Neuroscience में Default Mode Network (DMN) पर हुए शोध यह संकेत करते हैं कि आत्म-संदर्भित चिंतन (Self-referential thinking) एवं आत्मबोध का संबंध मस्तिष्क के विशिष्ट न्यूरल नेटवर्क से है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में बौद्ध अनात्मवाद, Hume की No-Ownership Theory, Metzinger की Self-Model Theory तथा DMN की अवधारणाओं का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन में दार्शनिक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं अंतर्विषयक पद्धति का प्रयोग करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि 'स्व' (Self) की पारंपरिक स्थायी अवधारणा को आधुनिक दर्शन एवं Neuroscience किस प्रकार पुनर्परिभाषित करते हैं। शोध का निष्कर्ष यह दर्शाता है कि 'स्व' (Self) कोई स्वतंत्र तत्त्वमीमांसक (Metaphysical) सत्ता न होकर अनुभवात्मक, प्रक्रियात्मक एवं न्यूरो-संज्ञानात्मक निर्माण है। इस प्रकार अध्ययन चेतना एवं आत्मबोध की समझ के लिए दर्शन और विज्ञान के मध्य एक महत्वपूर्ण अंतर्विषयक संवाद स्थापित करता है।

मुख्य शब्द (Keywords): अनात्मवाद, चेतना, Self-Model Theory, No-Ownership Theory, Default Mode Network (DMN) आत्मबोध, न्यूरोसाइंस, पंचस्कंध।

¹ जे.आर.एफ., आई.सी.पी.आर. (JRF, ICPR), दर्शनशास्त्र विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश

✉ रघुनाथ पटेल, E-mail: raghunaathgmscjb@gmail.com

प्रस्तावना (Introduction)

बौद्ध दर्शन में "अनात्मवाद" एक केंद्रीय सिद्धांत है, जिसके अनुसार मनुष्य में कोई स्थायी, शाश्वत अथवा अपरिवर्तनशील आत्मा विद्यमान नहीं है। मानव व्यक्तित्व केवल पंचस्कंधों—रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार एवं विज्ञान का समुच्चय है।¹ बौद्ध दृष्टिकोण के अनुसार चेतना एक निरंतर प्रवाहमान प्रक्रिया है, जो कारण-कार्य संबंध एवं प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत के आधार पर संचालित होती है। इस प्रकार बौद्ध दर्शन आत्मा की स्वतंत्र सत्ता को अस्वीकार करते हुए अनुभवात्मक चेतना को प्राथमिकता देता है।

इसी प्रकार David Hume ने स्व' (Self) को अनुभवों के समूह (Bundle of Perceptions) के रूप में व्याख्यायित किया है।² ह्यूम के अनुसार जब व्यक्ति अपने भीतर आत्मा की खोज करता है, तब उसे केवल संवेदनाएँ, विचार, स्मृतियाँ एवं अनुभूतियाँ प्राप्त होती हैं, कोई स्थायी आत्मा नहीं मिलती। यह दृष्टिकोण बौद्ध अनात्मवाद के अत्यंत निकट प्रतीत होता है।

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन एवं तंत्रिका-विज्ञान (Neuroscience) में भी स्व' (Self) की अवधारणा को लेकर व्यापक विमर्श हुआ है। Thomas Metzinger के अनुसार स्व' (Self) कोई वास्तविक सत्ता नहीं, बल्कि मस्तिष्क द्वारा निर्मित एक मॉडल (brain-generated model) है, जिसे उन्होंने Self-Model Theory के अंतर्गत स्पष्ट किया है।³ मेदिजंगर के अनुसार व्यक्ति जिस "मैं" का अनुभव करता है, वह वस्तुतः चेतन अनुभवों की एक आभासी संरचना है, न कि कोई स्वतंत्र आत्मा।

समकालीन तंत्रिका-विज्ञान में Antonio Damasio ने चेतना एवं स्व' (Self) को न्यूरल प्रक्रियाओं का परिणाम माना है।⁴ उनके अनुसार मस्तिष्क की जैविक एवं संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं से आत्मबोध का निर्माण होता है। इसी क्रम में Default Mode Network (DMN) पर हुए शोध यह संकेत करते हैं कि self-referential thinking अर्थात् आत्म-संदर्भित चिंतन का संबंध मस्तिष्क के विशिष्ट नेटवर्कों से है।⁵ इससे यह संभावना प्रबल होती है कि स्व' (Self) कोई तत्त्वमीमांसक सत्ता (metaphysical entity) न होकर मानसिक एवं न्यूरोलॉजिकल प्रक्रियाओं की उपज हो सकता है।

इस शोध-पत्र का उद्देश्य बौद्ध अनात्मवाद, Thomas Metzinger की Self-Model Theory तथा David Hume के Bundle Theory एवं Default Mode Network (DMN) का तुलनात्मक अध्ययन करना है। यह अध्ययन स्पष्ट करने का प्रयास करेगा कि विभिन्न दार्शनिक एवं वैज्ञानिक परंपराएँ स्व' (Self) और चेतना की प्रकृति को किस प्रकार समझती हैं तथा इन सिद्धांतों में कौन-कौन से वैचारिक साम्य एवं भेद विद्यमान हैं।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

बौद्ध दर्शन में अनात्मवाद की अवधारणा पर अनेक विद्वानों ने गहन अध्ययन किया है। संयुक्त निकाय तथा अन्य बौद्ध ग्रंथों में अनात्मवाद का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। बौद्ध दर्शन के अनुसार मानव व्यक्तित्व पंचस्कंधों का समूह है और इनमें से कोई भी तत्त्व स्थायी आत्मा का प्रतिनिधित्व नहीं करता। मिलिंद प्रश्न में प्रसिद्ध "रथ-दृष्टांत" (Chariot Analogy) के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि जिस प्रकार पहिए, धुरा, आसन आदि के संयोग को "रथ" कहा जाता है, उसी प्रकार पंचस्कंधों के समूह को व्यवहारिक रूप से "व्यक्ति" कहा जाता है, किन्तु उसमें कोई स्वतंत्र एवं शाश्वत आत्मा विद्यमान नहीं होती।⁶ नागार्जुन ने माध्यमिक दर्शन के अंतर्गत "शून्यता" के सिद्धांत को विकसित करते हुए यह प्रतिपादित किया कि सभी धर्म निःस्वभाव एवं प्रतीत्यसमुत्पन्न हैं।⁷ नागार्जुन के अनुसार वस्तुओं की

¹ Samyutta Nikāya, Khandha-samyutta, trans. Bhikkhu Bodhi (Boston: Wisdom Publications, 2000), pp. 840–845

² David Hume, A Treatise of Human Nature (Oxford: Oxford University Press, 2000), Book I, Part IV, Section VI, p. 251–263.

³ Being No One, by Thomas Metzinger (Cambridge, MA: MIT Press, 2003), pp. 1–25.

⁴ Antonio Damasio, Self Comes to Mind: Constructing the Conscious Brain (New York: Pantheon Books, 2010), p. 78.

⁵ Marcus Raichle, "The Default Mode of Brain Function," Proceedings of the National Academy of Sciences 98, no. 2 (2001): 676

⁶ Bhikshu Jagdish Kashyap (Trans.). Milindaprasna, Part 2/1, pp. 30–34

⁷ Nagarjuna, Mūlamadhyamakakārikā, Chapter 18.

स्वतंत्र सत्ता नहीं होती, उनका अस्तित्व केवल परस्पर-निर्भर संबंधों के आधार पर समझा जा सकता है। यहां अस्तित्व एक निरंतर परिवर्तनशील प्रक्रिया है, जिसमें प्रत्येक अवस्था उत्पन्न होकर नष्ट होती रहती है और उसी से अगली अवस्था का उदय होता है। इस प्रवाह में किसी प्रकार का स्थायी या अपरिवर्तनशील तत्व नहीं माना गया है। यही कारण है कि व्यक्ति को न पूर्णतः वही कहा जा सकता है और न पूर्णतः भिन्न। चेतना भी सतत क्रम में प्रवाहित होती है, जहाँ एक जीवन के अंतिम विज्ञान के समाप्त होते ही दूसरे जीवन का प्रथम विज्ञान उत्पन्न हो जाता है।⁸ बौद्ध विदुषी रीज डेविड्स के अनुसार चेतना केवल मानसिक स्पंदनों की विच्छेदयुक्त श्रृंखला है, जिसका संबंध एक जीवित संगठन के साथ है।⁹ Walpola Rahula ने अपनी प्रसिद्ध कृति *What the Buddha Taught* में स्पष्ट किया है कि व्यक्तित्व निरंतर परिवर्तनशील प्रक्रियाओं का समूह है।¹⁰ इसी प्रकार Rupert Gethin ने बौद्ध चेतना-विज्ञान का विश्लेषण करते हुए बताया कि बौद्ध दृष्टि में "स्व" एक सतत परिवर्तित होने वाली प्रक्रिया है, न कि स्थायी सत्ता।¹¹

David Hume ने अपने प्रसिद्ध *Bundle Theory of Self* में "स्व" (Self) की किसी भी स्थायी, अपरिवर्तनशील या स्वतंत्र सत्ता के अस्तित्व का स्पष्ट रूप से निषेध किया है। उनके अनुसार जिसे हम "स्व" (Self) कहते हैं, वह वास्तव में विभिन्न मानसिक अवस्थाओं जैसे संवेदनाएँ, अनुभव, विचार, भावनाएँ और स्मृतियाँ का एक सतत प्रवाहित और अस्थायी समूह मात्र है।¹² ह्यूम का तर्क है कि जब व्यक्ति आत्मनिरीक्षण (Introspection) करता है, तो उसे किसी स्थायी आत्मा का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं होता, बल्कि केवल बदलते हुए अनुभवों (perceptions) की एक निरंतर धारा प्राप्त होती है इसलिए "स्व" (Self) कोई अलग सत्ता नहीं, बल्कि इन अनुभवों (perceptions) का ही एक समूह (bundle) है।¹³

Thomas Metzinger ने *Self-Model Theory* के माध्यम से यह प्रतिपादित किया कि "स्व" (Self) कोई स्वतंत्र एवं स्थायी सत्ता नहीं, बल्कि मस्तिष्क द्वारा निर्मित एक पारदर्शी मानसिक मॉडल है। उनके अनुसार व्यक्ति जिस "मैं" का अनुभव करता है, वह वास्तव में चेतन अनुभवों की संरचित प्रस्तुति है। मेटिज़िंगर का यह सिद्धांत आधुनिक संज्ञानात्मक विज्ञान (Cognitive Science) तथा *Philosophy of Mind* में अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है और चेतना-अध्ययन के क्षेत्र में "स्व" (Self) की पारंपरिक अवधारणा को चुनौती देता है।¹⁴ उन्होंने आगे चलकर चेतना, आत्मबोध एवं मानसिक प्रतिरूपों (Mental Representations) पर भी विस्तार से चर्चा की, जहाँ "स्व" (Self) को अनुभवजन्य एवं तंत्रिका-संज्ञानात्मक (Neuro-Cognitive) प्रक्रिया के रूप में समझाया गया है।¹⁵

Antonio Damasio ने चेतना एवं आत्मबोध को मस्तिष्कीय प्रक्रियाओं से उत्पन्न माना है। उनके अनुसार भावनाएँ, स्मृतियाँ तथा शारीरिक अनुभव मिलकर "स्व" (Self) की अनुभूति का निर्माण करते हैं। इस प्रकार चेतना को जैविक एवं न्यूरोलॉजिकल प्रक्रियाओं के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है।¹⁶ आधुनिक Neuroscience में Default Mode Network (DMN) पर हुए शोधों ने आत्म-संदर्भात्मक चिंतन (Self-referential thinking) तथा आत्मबोध (Self-awareness) की न्यूरोलॉजिकल संरचना को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। Marcus Raichle के अनुसार DMN मस्तिष्क का वह नेटवर्क है, जो आत्म-चिंतन, स्मृति एवं आंतरिक मानसिक प्रक्रियाओं से संबंधित है।

⁸ Bhikshu Jagdish Kashyap (Trans.). *Milindaprasna*, Part 2/2/10

⁹ C.A.F. Rhys Davids – *Buddhist Psychology* p. 49-50.

¹⁰ *What the Buddha Taught*, Walpola Rahula (New York: Grove Press, 1974), pp. 51–66.

¹¹ *Foundations of Buddhism* (Oxford: Oxford University Press, 1998), pp. 133–145

¹² David Hume, *A Treatise of Human Nature* (Oxford: Oxford University Press, 2000), Book I, Part IV,

¹³ *Ibid.*, p. 252.

¹⁴ *Being No One*, Thomas Metzinger (Cambridge, MA: MIT Press, 2003), pp. 1–8.

¹⁵ *The Ego Tunnel*, Thomas Metzinger (New York: Basic Books, 2009), pp. 5–12.

¹⁶ *Self Comes to Mind*, Antonio Damasio (New York: Pantheon Books, 2010), pp. 15–35.

इन अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि "स्व" (Self) का अनुभव मस्तिष्कीय क्रियाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है।¹⁷

उपरोक्त साहित्य से स्पष्ट होता है कि बौद्ध दर्शन, पाश्चात्य दर्शन तथा आधुनिक तंत्रिका-विज्ञान तीनों ही "स्व" (Self) की पारंपरिक स्थायी अवधारणा पर प्रश्न उठाते हैं। यद्यपि इनके दृष्टिकोणों में पद्धतिगत भिन्नताएँ हैं, तथापि सभी यह संकेत करते हैं कि आत्मबोध एक प्रक्रियामूलक, अनुभवात्मक एवं परिवर्तनशील संरचना है।

शोध पद्धति (Methodology)

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक शोध पद्धति (Qualitative Research Method) के अंतर्गत तुलनात्मक (Comparative), विश्लेषणात्मक (Analytical) एवं अंतर्विषयक (Interdisciplinary) दृष्टिकोणों का उपयोग किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बौद्ध अनात्मवाद, Davide Hume की No-Ownership Theory, Thomas Metzinger की Self-Model Theory तथा आधुनिक Neuroscience में प्रयुक्त Default Mode Network (DMN) की अवधारणाओं का तुलनात्मक विश्लेषण करना है।

इस शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत संयुक्त निकाय, मिलिंदप्रश्न, Mulamadhyamakakarika, तथा The Connected Discourses of the Buddha जैसे बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन किया गया है। पाश्चात्य दर्शन के संदर्भ में A Treatise of Human Nature का विश्लेषण किया गया है। आधुनिक चेतना-अध्ययन एवं तंत्रिका-संज्ञानात्मक दृष्टिकोण के लिए Being No One : The Self & Model Theory of Subjectivity, The Ego Tunnel, Self Comes to Mind तथा Default Mode Network संबंधी शोधों का उपयोग किया गया है।

अध्ययन में दार्शनिक-विश्लेषणात्मक (Philosophical-Analytical) पद्धति अपनाई गई है, जिसके अंतर्गत "स्व" (Self) चेतना, आत्मबोध तथा व्यक्तित्व की अवधारणाओं का वैचारिक परीक्षण किया गया है। इसके अतिरिक्त तुलनात्मक पद्धति (Comparative Method) के माध्यम से बौद्ध अनात्मवाद एवं आधुनिक संज्ञानात्मक विज्ञान (Cognitive Science) के सिद्धांतों के मध्य समानताओं एवं भिन्नताओं का विश्लेषण किया गया है।

शोध में आधुनिक Neuroscience से संबंधित अध्ययनों, विशेषतः Default Mode Network (DMN) पर आधारित शोधों का भी उपयोग किया गया है, ताकि आत्म-संदर्भित चिंतन (Self-referential thinking) एवं चेतना की न्यूरोलॉजिकल संरचना को समझा जा सके। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन दार्शनिक विमर्श एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समन्वय द्वारा "स्व" (Self) की प्रकृति को व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास करता है।

परिणाम (Results)

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि बौद्ध अनात्मवाद, David Hume के No-Ownership Theory, Thomas Metzinger की Self-Model Theory तथा आधुनिक Neuroscience में प्रयुक्त Default Mode Network (DMN) सभी "स्व" (Self) की स्थायी अवधारणा को अस्वीकार करते हैं। अध्ययन में पाया गया कि बौद्ध दर्शन व्यक्तित्व को पंचस्कंधों का समूह मानता है, जबकि ह्यूम "स्व" (Self) को perception के समूह के रूप में व्याख्यायित करते हैं। इसी प्रकार मेटिजंगर "स्व" (Self) को मस्तिष्क द्वारा निर्मित एक मानसिक मॉडल मानते हैं। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि आधुनिक Neuroscience में DMN पर हुए शोध आत्म-संदर्भित चिंतन (Self-referential thinking) को मस्तिष्कीय नेटवर्क से जोड़ते हैं। इससे यह संकेत प्राप्त होता है कि आत्मबोध (Self-awareness) का संबंध न्यूरोलॉजिकल प्रक्रियाओं से है, न कि किसी स्वतंत्र तत्त्वमीमांसीय सत्ता (Metaphysical entity) से। तुलनात्मक विश्लेषण से यह निष्कर्ष सामने आया कि विभिन्न दार्शनिक एवं वैज्ञानिक परंपराओं में

¹⁷ Marcus E. Raichle et al., "A Default Mode of Brain Function," Proceedings of the National Academy of Sciences 98, no. 2 (2001): 676-682.

पद्धतिगत भिन्नताओं के बावजूद "स्व" (Self) को प्रक्रियात्मक (Processual), अनुभवात्मक (Experiential) एवं परिवर्तनशील (Dynamic) रूप में समझने की प्रवृत्ति विद्यमान है।

चर्चा (Discussion)

प्रस्तुत अध्ययन यह दर्शाता है कि बौद्ध अनात्मवाद एवं आधुनिक चेतना-अध्ययन के मध्य गहरा वैचारिक संबंध विद्यमान है। मिलिंदप्रश्न, का "स्थ-दृष्टांत" तथा David Hume का No-Ownership Theory दोनों इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं कि "व्यक्ति" केवल विभिन्न अनुभवों एवं घटकों का समुच्चय है। इससे यह स्पष्ट होता है कि "स्व" (Self) की अनुभूति एक निरंतर प्रवाहमान प्रक्रिया है।

Thomas Metzinger की Self-Model Theory, बौद्ध अनात्मवाद के साथ महत्वपूर्ण समानता रखती है, क्योंकि दोनों ही "स्व" (Self) को आभासी या निर्मित संरचना के रूप में देखते हैं। तथापि बौद्ध दर्शन का लक्ष्य आध्यात्मिक मुक्ति एवं दुःख-निरोध है, जबकि आधुनिक Cognitive Science चेतना की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करती है।

DMN पर आधारित Neuroscience शोधों ने यह संकेत दिया कि आत्म-संदर्भित चिंतन एवं आत्मबोध मस्तिष्क की विशिष्ट प्रक्रियाओं से संबंधित हैं। इससे यह संभावना प्रबल होती है कि "स्व" (Self) कोई शाश्वत सत्ता न होकर मानसिक एवं न्यूरोलॉजिकल प्रक्रियाओं का परिणाम है। इस प्रकार अध्ययन दर्शन एवं विज्ञान के मध्य एक अंतर्विषयक (Interdisciplinary) संवाद स्थापित करता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि बौद्ध अनात्मवाद, Hume की No-Ownership Theory, Metzinger की Self-Model Theory तथा आधुनिक Neuroscience सभी "स्व" (Self) की पारंपरिक स्थायी अवधारणा को चुनौती देते हैं। यद्यपि इन सिद्धांतों की पद्धति एवं उद्देश्य भिन्न-भिन्न हैं, तथापि सभी यह संकेत करते हैं कि आत्मबोध एक प्रक्रियात्मक (Processual), अनुभवात्मक (Experiential) एवं परिवर्तनशील (Dynamic) निर्माण है।

बौद्ध दर्शन चेतना को प्रतीत्यसमुत्पाद एवं पंचस्कंधों के आधार पर समझाता है, जबकि आधुनिक Neuroscience इसे मस्तिष्कीय प्रक्रियाओं एवं न्यूरल नेटवर्कों से जोड़ता है। इस तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि "स्व" (Self) को स्वतंत्र एवं शाश्वत सत्ता के रूप में देखने के बजाय एक परिवर्तनशील एवं अनुभवजन्य प्रक्रिया के रूप में समझना अधिक संगत प्रतीत होता है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में चेतना-अध्ययन (Consciousness-study) एवं तंत्रिका विज्ञान (Neuroscience) के मध्य एक महत्वपूर्ण वैचारिक सेतु का कार्य करता है तथा भविष्य के अंतर्विषयक (Interdisciplinary) शोधों के लिए नई संभावनाएँ प्रस्तुत करता है।

बौद्ध दर्शन के अनुसार चेतना पंचस्कंधों एवं प्रतीत्यसमुत्पाद के आधार पर निरंतर प्रवाहमान रहती है। दूसरी ओर आधुनिक neuroscience यह संकेत करता है कि आत्मबोध मस्तिष्कीय नेटवर्कों एवं न्यूरल प्रक्रियाओं का परिणाम है। इस प्रकार दोनों परंपराएँ आत्मा की पारंपरिक तात्त्विक (Metaphysical) अवधारणा के स्थान पर प्रक्रियामूलक (Processual), चेतना की अवधारणा प्रस्तुत करती हैं।

अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि बौद्ध दर्शन केवल दार्शनिक विश्लेषण तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका अंतिम लक्ष्य दुःख से मुक्ति एवं निर्वाण की प्राप्ति है। यही तत्व उसे आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोणों से भिन्न बनाता है। तथापि चेतना एवं आत्मबोध के समकालीन दार्शनिक संवादों में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होती है।

अतः कहा जा सकता है कि बौद्ध अनात्मवाद एवं आधुनिक चेतना-अध्ययन के मध्य तुलनात्मक संवाद न केवल मन के दर्शन (Philosophy of mind) के क्षेत्र को समृद्ध करता है, बल्कि मानव चेतना की प्रकृति को समझने के लिए एक व्यापक अंतर्विषयक (Interdisciplinary) दृष्टिकोण भी प्रदान करता है।

संदर्भ (References)

- Bodhi, B. (2000). *The connected discourse of the Buddha : A translation of the Samyutta Nikaya(Trans)*, . Boston: Wisdom Publications.

- Damasio, A. (2010). *Self comes to mind: Constructing the conscious brain*. New York (USA): Pantheon Books.
- Davids, C. A. (1914). *Buddhist psychology*. London: G. Bell and Sons Ltd.
- Hume, D. (1739). *A treatise of human nature*. London(UK): John Noon.
- Hume, D. (2000). *A treatise of human nature*. Oxford(UK): Oxford University Press.
- Kashyap, B. J. (1951). *Milindapañha*. (Trans.) (second edition ed.). Kolkata, India: Bhikshu Mahanam Pradhanmanri dharmoday sabha.
- Metzinger, T. (2003). *Being no one: The self-model theory of subjectivity*. Cambridge: MIT Press.
- Metzinger, T. (2009). *The ego tunnel: The science of the mind and the myth of the self*. New York: Basic Books.
- Rahula, W. (1974). *What the Buddha taught*. New York: Grove Press.
- Raichle, M. (2001). The default mode of brain function. *Proceedings of the National Academy of Sciences*, 98 (2), 676-682.
- Shalya, Y. (1990). *Nagarjunakṛta Madhyamaka-śāstra aur Vīgrahavyāvartanī*. Delhi: Bharatiya Darsanik Anusandhan Parisad.
- Williams, P. (1998). *Foundations of Buddhism*. Oxford, England: Oxford University Press.